ए सुनी गंगाराम बाजपेई, उहां था आसन ।
आया बार दोए दीदार को, जान सनमन्ध आपन ॥१३९॥

गंगाराम वाजपेई वहां का महंत था । वह अपनी आत्मा के कल्याण के भाव से श्री जी के दर्शन करने के लिए पहले भी दो-चार बार आया था । जब उसने यह बात सुनी, तब ।

तिन जाए बरज्या उनको, क्यों एह करने लगा काम ।
वेरागियों को लूटते, होएगा बदनाम ॥१४०॥

उसने उसको समझाया कि साधुओं के लुट जाने पर बड़ी बदनामी होगी जरा इस विषय पर विचार करो ।

और ए ऐसे नहीं जो कोई लूट ले, मरे मारेंगे तुम ।
काहे को भूल के सुकन, मुंह से काढ़ दिखाओ हम ॥१४१॥

तुम्हें इस बात की जानकारी ही नहीं है कि वह वैरागी ऐसे नहीं हैं कि कोई भी उन्हें लूट ले । उन्हें लूटना आसान नहीं है । वह अपनी रक्षा के लिए मर मिटेंगे या तुम्हें मार डालेंगे । भूल कर भी ऐसे अनुचित विचार मुंह से न निकालना ।

लागी लानत गढ़े को, उस दिन से हुआ खुवार ।
सो रोज कयामत लों, ठौर न आवे लगार ॥१४२॥

उस दिन से गढ़े को फिटकार लगी । वह नष्ट होता गया । महाप्रलय के समय तक गढ़े का उद्धार नहीं हो सकेगा ।

महामत कहे ऐ साथ जी, ए गढ़े की बीतक ।
कछुक पीछे रही है, सो कहों हुकम हक ॥१४३॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! यह गढ़े का वृत्तान्त आपको सुनाया है । श्री राजजी के हुक्म से वह भी कहता हूं ।

(प्र० ५८, चौ० ३३००)

गढ़े की मजल में, आया याद रामनगर ।
तिनकी मजल कहत हों, सुनियो साथ खबर ॥१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! अब गढ़े की बीतक कहते हुए राम नगर की बाकी बातें याद आ गई । उनका वर्णन करता हूं । सावधान हो कर सुनिए ।

Nijanand App

सूरत सिंह ईमान ल्याइया, देख के दीदार ।
सक मन में ना रही, देखा धनी निरधार ॥२॥

सूरतसिंह श्री जी के स्वरूप की पहचान करके ईमान ले आया । धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के अपने सामने दर्शन कर पहचान लिया और किसी प्रकार का संशय बाकी ना रहा ।

सुनिया तारतम इनने, देखी हक सूरत ।
ए बात मैं किनसों कहों, कौन ल्यावे प्रतीत इत ॥३॥

सूरतसिंह ने श्री जी से तारतम लिया और श्री जी के स्वरूप में अपने धाम के धनी श्री राज जी महाराज की पहचान की । उसने अपने मन में विचार किया कि इस पहचान की बात मैं किस को बताऊं । मेरी बातों पर कौन विश्वास करेगा ।

गया दीवान देवकरन पे, एक सुनी मैं बात ।
तुमारे आगे कहत हों, मैं देखी हक जात ॥४॥

सूरतसिंह दीवान देवकरन के पास गया और उनसे कहा कि मैंने एक बात सुनी है । उसे आपके सामने कहता हूं । मैंने ब्रह्मसृष्टि और अक्षरातीत को अपनी आंखों से देखा है ।

चलो मेरे साथ तुम, मैं कराऊं दीदार ।
केतकी पर रहत हैं, देखो धनी निरधार ॥५॥

आप मेरे साथ चलो । मैं उनके दर्शन कराऊंगा । वह केतकी नदी के तट पर बैठे हैं । साक्षात् धाम के धनी पूर्णब्रह्म हैं ।

ल्याए दीवान देवकरन को, देख के लगे कदम ।
सक कछू ना ल्याइया, सिर पर चढ़ाया हुकम ॥६॥

सूरत सिंह दीवान देवकरन को स्वामी जी के पास ले आए । देवकरन ने श्री जी के चरणों में प्रणाम किया । उसके दिल में किसी प्रकार की शंका ना रही । श्री जी के हर हुकम को शिरोधार्य किया ।

थोड़ी चरचा सुन के, दिल की भागी सक ।
मैं महाराज सों कहों, ओ ईमान ल्यावें बेसक ॥७॥

श्री जी के मुखारबिन्द से थोड़ी सी चर्चा सुन कर उनके मन की शंकाएं दूर हो गई और वो यह पहचान गए कि यही विजियाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार है । देवकरन ने मन में विचार किया मैं श्री जी के पहचान की बातें छत्रसाल जी से करूंगा । वह निश्चित ही पूर्ण विश्वास के साथ श्री जी के चरणों में समर्पित हो जायेंगे ।

Nijanand App

अब सेवा के साथी कहों, जो रामनगर में ।
मोदी खाने की सेवा दई, सो हुई पतिराम सें ॥८॥

अब मैं सेवा करने वाले साथियों के नाम कहता हूं। रामनगर में सुन्दरसाथ ने श्री जी की अत्याधिक सेवा की। मोदी खाने (अनाज-भण्डार) की सेवा पतिराम ने की।

केसवदास और जेनती, हुए सामिल पतिराम के ।
और जेनती पानी पिलावत, साथ की सेवा करी ऐ ॥९॥

पतिराम के साथ केशवदास और जयन्ती दास ने अनाज भण्डार की सेवा में भाग लिया। जयन्ती दास सुन्दरसाथ को पानी पिलाने की विशेष सेवा करते थे।

हाट से सौदा ल्यावत, इन समें गोकुलदास ।
कुल अखत्यार खान सामा को, था गरीबदास खास ॥१०॥

बाजार से सौदा-सामान लाने की सेवा गोकुल दास जी ने की। रसोई बनाने की देख रेख की कुल सेवा गरीब दास जी करते थे।

रसोई में खेमदास, और गंगाराम ।
और सन्त दास गोवरधन, पीछे सूरजमलें किया काम ॥११॥

रसोई सेवा तथा भोजन व्यवस्था खेमदास, गंगाराम, संतदास और गोवर्धन भाई किया करते थे मगर बाद में सूरजमल भी रसोई बनाने के काम में शामिल हो गए।

इन सबों पर दरोगा, रहता वृन्दावन ।
लकड़ी जंगल की टहल, रहें बराड़ी साथ सबन ॥१२॥

इस समय सब कार्यों के प्रमुख वृन्दावन थे। बराड़ के सुन्दरसाथ जंगल से लकड़ी लाने की सेवा में मग्न रहते थे।

गावनें में रहत हैं, ए जो निरमल दास ।
तिन सेती सामिल रहे, भाई मुकुन्द दास खास ॥१३॥

निर्मल दास जी सर्वदा वाणी गायन में लगे रहते थे। उनके साथ मुकुन्द दास विशेषकर शामिल होते थे।

श्री बाई जी गावनें में रहें, संग गोदावरी ।
बुआबाई हमो गावें, सनंधां जो उतरी ॥१४॥

श्री जी को सनंध ग्रन्थ में जो सनंधें उतरी थी, उसे राग-रागिनियों में श्री बाई जू राज तेजकुवंरी जी गाया करती थी। उनके साथ गोदावरी, बुआ तथा हम्मो बेगम शामिल रहती थी।

Nijanand App

और चौकी दो जिनस की, ए गावें बारे अपनें ।
निरमल दास नित्याने, रिझावें राज सब में ॥१५॥

वाणी गाने वालों की दो मण्डलियां थी । जो समय-समय पर श्री जी की वाणी का गायन करती थी। गाने में प्रवीण निर्मल दास हर रोज अपनी मधुर आवाज में श्री जी को रिझाया करते थे ।

और आरती में रहत हैं, लाल मुकुन्द दास ।
उत्तम दास पखावज में, सब सिरे निरमल दास ॥१६॥

संध्या आरती लालदास व मुकुन्द दास गाया करते थे । उत्तम दास ढोलक बजाया करते थे । आरती गायन करने वाले सब सुंदरसाथ में निर्मल दास जी मुख्य रहते थे ।

और बनमालीदास सामिल, रहें आरती में तैयार ।
सेवा अपनी मिनें, नए नए करें विचार ॥१७॥

आरती गाने में बनमाली दास सबके साथ शामिल रहते थे । वह सेवा करने की नई-नई योजना बनाते रहते थे । नए ढंग से सेवा हो इसके लिए नित्य विचार करते रहते थे ।

खिमाईदास ताल बजावत, कनड़ गावने में ।
कल्याण कला जमावत, ए सेवे आरती समें ॥१८॥

खिमाई दास ताल बजाते और कन्नड़ भाई मग्न होकर गायन करते। कल्याण भाई आरती गाने के समय स्वर और ताल का खास ध्यान रखते थे ।

और साथ सब ठाढ़ा रहे, छबीलदास बजावें संख ।
आरती संझा समें होत है, करे मगन होए निसंक ॥१९॥

छबीलदास बड़ी होशियारी से शंख बजाते थे । सभी सुंदरसाथ सांयकाल आरती के समय निस्संदेह व मग्न होकर आरती का आनन्द लेते थे ।

अग्यारह उच्छव कौसल्या के, पधराए घरों राज ।
सेवा करी भली भांत सों, पूरे मनोरथ काज ॥२०॥

कौशल्या बाई ने अपने घर ११ रसोई उच्छव किए । श्री जी को अपने घर बुलाकर प्रसन्न चित्त से सेवा की । श्री जी ने उनकी मनोकामना को पूर्ण किया ।

Nijanand App

दोए उच्छव तिवारी उदई, घरों पधराए अपने ।
एक भतीजा घासी, जान गुरू वेरागी पने ॥२१॥

उदई तिवारी ने अपने घर श्री जी की दो रसोई-उच्छव किये । उसका एक भतीजा घासी था । जिसने श्री जी को वैरागी भेष के कारण गुरू माना ।

रामजनी भगवती, तिनकी महतारी ने ।
उच्छव कर पधराए, जान पने अपने ॥२२॥

रामजनी और भगवती बाई की माता ने अपना धाम का धनी जानकर अपने घर पधरावनी कर, उच्छव रसोई की ।

मकरन्द ने उच्छव किया, तन मन धन सोंपे ।
कदमों लाग ठाढ़ा रहे, कछू रख्या ना पीछे ॥२३॥

मकरन्द भाई ने श्री जी व सुंदरसाथ को अपने घर बुलाकर रसोई उच्छव मनाया और श्री जी के चरणों में तन मन धन अर्पण कर दिया । चरणों में प्रणाम कर सेवा हेतु अर्पित हुआ । उसने अपने लिए कुछ भी बाकी नहीं रखा ।

अमरा दत्ता दगड़ा, आए बराड़ से ।
किया उच्छव उमंग सों, सनमुख हुए साथ में ॥२४॥

बराड़ से अमरा दत्ता और दगड़ा भाई आए । उन्होंने भी श्री प्राणनाथ जी को अपना धाम का धनी मान कर सुंदरसाथ के साथ बुला कर अपने घर रसोई उच्छव किया । सेवा में मग्न हो कर सुन्दरसाथ के सन्मुख हुए ।

देवी काका जयन्ति, इन किया उच्छव ए ।
श्री राज पधराए इन घरों, संग लिए सेवे ॥२५॥

जयन्ती भाई के चाचा देवी ने अपने घर में श्री जी व सुन्दरसाथ को बुलाया और एक उच्छव रसोई देकर सेवा की एवं अपनी मनोकामना पूर्ण की ।

हीरामन बढ़ई नें, करी उच्छव रसोई ।
श्री राज साथ को बुलाए, सेवा इनसे भली भई ॥२६॥

हीरामन बढ़ई ने श्री जी व सुन्दरसाथ को अपने घर बुला कर बहुत ऊंचे भाव के साथ रसोई उच्छव किया ।

Nijanand App

सातमी मजल आए गढ़े, एक मास तेरह दिन ।
हुकम हुआ श्री राज का, जाओ सुलतान पे मोमिन ॥२७॥

रामनगर से चलकर सात पड़ाव डाल कर श्री जी सुन्दरसाथ के साथ गढ़े पहुंचे । वहां एक महीना १३ दिन ठहरे । श्री जी ने फिर सुन्दरसाथ को हुकम दिया कि औरंगजेब के पास जाकर श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी हैं, यह संदेश पहुंचाओ ।

गढ़ें में आए मिली, बाई धरमा डोकरी ।
ईमान ल्याई सुनते, कछू सक ना इन करी ॥२८॥

धर्माबाई बुढ़िया गढ़े में आकर तारतम ले कर सुन्दरसाथ में शामिल हुई । श्री जी के मुखारविन्द से चर्चा सुनते ही उसके दिल में पूर्ण विश्वास हो गया और सब संदेह मिट गए ।

अनन्त राम आइया, और आया घनस्याम ।
हरबाई संग इनके, और सदानन्द इस ठाम ॥२९॥

अनन्तराम, घनश्याम, सदानन्द और उनके साथ हरबाई ने यहां आकर चर्चा सुनी और धर्मनिष्ठ सुंदरसाथ बन कर तारतम लिया ।

गंगाराम उज्जैन का, और वासू केसर ।
उदैती खिमोती दयाली, मोहन धनबाई इन पर ॥३०॥

उज्जैन से गंगाराम, वासू केसर, उदैती बाई, खिमौती बाई तथा दयाली बाई आकर सुन्दरसाथ में शामिल हुए । उनके साथ मोहन भाई और धन बाई भी आई ।

फकीरा बेनी बेहेन थी, करमेती परवान ।
मानिक और पूर बहू, और लखमी आई जान ॥३१॥

फकीरा, बेनी बेन, करमेती बाई, माणिक बाई, पूरबहू और लक्ष्मी बाई श्री जी के स्वरूप की पहचान कर बड़े ईमान के साथ तारतम लेकर सुंदरसाथ में शामिल हुए ।

और गोवरधन, और भट्ट मुकुन्द जी ।
देवीदास हरखो गढ़ा में, आए रूह कदमों दी ॥३२॥

गोवर्धन भाई, मुकुन्द भट्ट, देवीदास, हरखो बाई आदि गढ़े में आकर स्वामी जी के चरणों में समर्पित हुए।

Nijanand App

बिन्दा बिहारी सन्त दास, वैस्य दुरजन सिंह जे ।
खांडेराए रूप सिंह, कीरत सिंह कदमों पहुंचे ॥३३॥

बिंदा, बिहारी, सन्तदास, दुर्जन सिंह वैश्य, खाण्ड राय, रूप सिंह कीर्त सिंह आदि ने यहां पहुंचकर श्री जी के चरणों का आसरा लिया ।

दरसा धरमोल रतन, और कुसल सिंह मधुकर ।
मयाराम वैद्य उहां का, लालसाह भदोरिया योंकर ॥३४॥

इसी तरह दरसा, धर्मोला, रतनबाई, कुशलसिंह, मधुकर, लालशाह भदोरिया और यहीं के निवासी मैयाराम वैद्य सभी श्री जी के चरणों में समर्पित हुए ।

इन समें लालदास को, हुआ हजूर का हुकम ।
जाए कहो सुलतान को, ल्याए फेर पैगाम ऊपर तुम ॥३५॥

इसी समय श्री जी ने लालदास को औरंगजेब के पास जाने का हुकम दिया । उन्होंने कहा कि ईमाम मेंहदी साहब के आने तथा कयामत के जाहेर होने का पैगाम पहुंचा दो और कहना कि हम फिर आपके पास पैगाम ले कर आए हैं ।

पूस सुद पांच को, बीरजू दई खबर ।
राम नगर राजा नें, अस्तल खोद्‌यो भली तर ॥३६॥

पौष (पौह) सुदी पंचमी के दिन वीरजू भाई ने आकर श्री जी को बताया कि रामनगर के राजा ने हमारी हवेली और मंदिर को गिरा दिया है ।

सुन कान दुःख पाइया, हुआ गढ़ा खराब ।
ज्यों खोदो अस्तल को, ताको रहे न पकड़ो ताब ॥३७॥

ये समाचार सुनकर श्री जी को बहुत दुःख हुआ । जिस तरह से राजा ने हवेली को खोदकर नष्ट किया था, उसी तरह रामनगर भी नष्ट हो गया । कोई भी वहां बच नहीं सका । यह वृतान्त जब श्री जी गढ़ा में थे तब हुआ इस कारण गढ़ा का स्थान अशुभ हुआ ।

जब देवकरन विदा भए, जब पूछी श्री राज नें बात ।
तुम अपना ठौर छोड़ के, और मुलक क्यों जात ॥३८॥

देवकरण भाई जब गढ़े से मऊ के लिए चलने लगे तब स्वामी जी ने उनसे पूछा कि आप अपनी जन्म भूमि छोड़ कर अन्य स्थान राम नगर में क्यों बसे ।

Nijanand App

तब दीवानें ए कही, एक बात पर आए रिसाए ।
तबसे इहां रह गए, उहां जाने न पाए ॥३९॥

तब दीवान देवकरण ने कहा हम एक बात से रूठ कर यहां चले आए थे, तभी से यहां रहते हैं। वहां वापस नहीं जा सके।

तब श्री राज नें कहया, तुम आए इन काज ।
एह वस्त लेए के, पहुंचावने महाराज ॥४०॥

श्री जी ने सुन कर ये कहा - आप केवल इसी कार्य के लिए ही यहां आए थे। छत्रसाल जी के पास आप हमारे यहां आने का समाचार पहुंचा दीजिए।

हम सब राजा देखे, पै काहू न देखा अंकूर ।
सकुण्डल इन्हें परखी, तो इनसों होसी मजकूर ॥४१॥

हमने हिन्दुस्तान के सभी राजाओं को परख लिया। किसी के अंदर भी परमधाम का अंकूर दिखाई नहीं दिया। हमने छत्रसाल जी के अन्दर साकुण्डल की आत्मा को देखा है। इनसे हमारी चर्चा होगी।

जब लाल को हुकम हुआ, तब जाए देख्या कुरान ।
सोलह सिपारे मिनें, मूसे हारून का बयान ॥४२॥

जब लालदास को श्री प्राणनाथ जी ने औरंगजेब के पास दिल्ली जाने का हुकम दिया तो लालदास जी ने जाकर कुरान देखा। १६वें सिपारे में मूसे और हैरून का प्रसंग देखने का मिला।

तहां लिखा मूसे ने, खुदायसों करी अरज ।
मैं क्यों कर लड़ों फेरून सों, जोलों मेरी न करो गरज ॥४३॥

वहां लिखा है कि मूसा ने खुदा से प्रार्थना की कि फैरून बादशाह से मैं कैसे लडूं। जब तक आप मेरी जरूरत को पूरा न करें।

मैं फकीर ओ पातसाह, मैं पहुंच न सकों तिन ।
जो मेरा भाई देओ मुझको, तो लड़ों साथ मोमिन ॥४४॥

मैं तो एक साधारण फकीर वैरागी हूं और वो बादशाह है फिर मैं उसकी बराबरी कैसे कर सकता हूं। यदि मुझे मेरा भाई दे दो तो मैं अपने भले लोगों की मण्डली के साथ बादशाह से संघर्ष छेड़ सकता हूं।

तब खुदाए ने दिया, मूसे को भाई हारून ।
अब फेरून का ना चले, कर ना सके खून ॥४५॥

मूसे की प्रार्थना पर खुदा ने उसका भाई हारून दे दिया। अब फैरून बादशाह का कुछ भी नही चलेगा और वह किसी निर्दोष को मार नही सकेगा।

Nijanand App

एह आएत राज को, देखाई लालदास ।
आपन को एक राजा मिले, सो चाहिए मोमिन खास ॥४६॥

लालदास को ये आयत कुरान में मिली । वह कुरान का प्रसंग ला के उसने श्री जी को दिखाया । आपस में विचार किया कि हमको शीघ्र ही एक राजा मिलना चाहिए जो अवश्य ही मोमिन होगा ।

एह विचार करते, लाल रह्या लसकर सें ।
चरन दास गरीबदास, पहुंचाए लसकर में ॥४७॥

ये विचार करके लालदास जी को औरंगजेब के पास पैगाम ले जाने वाला हुकम रद्द कर दिया । स्वामी जी ने चरण दास और गरीब दास को औरंगजेब के पास भेजा ।

धरमा मिली लाल को, राह में जाते ।
तुम्हारी बात देव जी ने, करी छत्रसाल आगे ॥४८॥

लालदास को राह में धर्मा बाई बुढ़िया मिली । उसने बताया कि देवकरण ने आपके आगमन की बात छत्रसाल के सामने कर दी है ।

एह बात सुन लाल नें, आए आगे करी श्री राज के ।
बात अपनी होने लगी, छत्रसाल आगे ॥४९॥

लालदास ने यह बात सुन कर श्री जी को बताया कि छत्रसाल के घर अपनी चर्चा होने लगी है ।

तब देवजी पास पठाए, सन्त दास धरम दास ।
पाती लिख पहुंचाई, कहियो संदेसो खास ॥५०॥

तब श्री जी ने सन्त दास और धरम दास को देवकरण के पास भेजा और पत्र भी लिख कर दिया।

फेर अगरिए से भेजे, लाल उत्तम जीवन ।
और गोविन्द दास को, भेजे ऊपर मोमिन ॥५१॥

अगरिए से श्री जी ने लालदास, उत्तम दास, जीवन दास और गोविन्द दास को दुबारा महाराजा छत्रसाल के पास भेजा ।

बूढ़ी बूढ़ा मों आई, कमलावती रतन ।
राघव दास रेवादास, ए चारों मिल मोमिन ॥५२॥

कमलावती, रतन बाई, राघवदास और रेवादास यह चारों बूढ़ी बूढ़ा गांव में श्री जी के मुखारबिन्द से चर्चा सुनकर निजानन्द सम्प्रदाय में समर्पित हुए ।

Nijanand App

लखीराम ने परने, लिखाया नाम अपना ।
मैं तुम्हारे साथ आऊं, मैं जहान जाना सुपना ॥५३॥

लखी राम बाद में पन्ना में आकर तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हुआ । श्री जी के स्वरूप की पहचान करके उसने कहा मैं कभी आपके चरणों को छोड़ूंगा नहीं । यह संसार केवल झूठा सपना है ।

रामदास नें उच्छव किया, मिने रहमतर ।
तिनें कहया मैं हों तुम्हारा, जग सुपना दिया कर ॥५४॥

राम दास ने सुन्दरसाथ सहित श्री जी को बड़े प्रेम प्रीत के साथ घर में बुला कर उच्छव रसोई की। श्री जी की चर्चा सुन कर चरणों में समर्पित हो गया और कहा कि यह संसार झूठा सागर है ।

संतावरी दीपा मिली, गोकुल दास की माँ ।
अग्यारह दिन बिलहरी रहे, सब चले होए जमां ॥५५॥

संतावरी, दीपा बाई और गोकुल दास की माता सुन्दर साथ में शामिल हुए । श्री जी बिलहरी में ११ दिन ठहरे । सब सुन्दरसाथ श्री जी के चरणों में वहां इकट्ठे हो गए ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए गढ़ा की बीतक ।
आगे कहो परना की, जो है हुकम हक ॥५६॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह गढ़े की बीतक है । अब पन्ना की बीतक कहता हूं ।

(प्रकरण ५९ चौ० ३३५६)

श्री जी वा महाराजा जी की भेंट

पहिले सूरत सिंह सुनी, बीच राम नगर ।
देवजी को दिखाइया, तो कहया पैगम्बर ॥१॥

सबसे पहले सूरत सिंह ने रामनगर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी से जाग्रत बुद्ध के ज्ञान की चर्चा करी । फिर उसने दीवान देवकरण को श्री जी के स्वरूप के दर्शन कराये । श्री जी के स्वरूप की पहचान करने के बाद देवकरण श्री जी के आने का सन्देश छत्रसाल जी को देने के लिए मऊ गए । इसलिए देवकरण जी को पैगम्बर कहा है ।

Nijanand App